ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE

24, AKBAR ROAD, NEW DELHI
COMMUNICATION DEPARTMENT

Highlights of the Press briefing **Held at 1615 Hours 08.08.2014**

Shri Salman Khurshid addressed the media today.

श्री सलमान खुर्शीद ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि आज मैं देश की विदेश नीति के संदर्भ में कहूंगा। क्योंकि उस संबंध में बहुत सारे विषय उठ रहे हैं और अगले कुछ सप्ताह में उठते रहेंगे।

हम लोगों ने जो अभ्यास किया है और जो आप लोगों के माध्यम से हमें सूचनाएं प्राप्त हुई हैं, और जो हम लोगों ने देखा है होता हुआ, उसको लेकर एक प्रश्न मन में उठता है। पार्टी के सब साथियों में यह चर्चा चली है कि जो भारत की विदेश नीति है जिस पर आप सहमति से नहीं बल्कि जब से भारत आजाद हुआ तब से एक आम सहमति National consensus built around the foreign policy - Panchsheel Principles - are of enlightened self interest that we have articulated across the globe and our appreciation of India's foreign policy and implementing of India's foreign policy.

कई बातें ऐसी हुई हैं जिसको लेकर यह कहा जा सकता है कि भारत में जो कुछ भी किया विदेश नीति के संदर्भ में उसकी प्रशंसा हुई, लोगों ने उसका स्वागत किया और लोगों ने उसको सराहा और यही कारण है जो इतनी बड़ी संख्या में संयुक्त राष्ट्र में बहुत–बहुत सारे सदस्य भारत को जिसमें अमेरिका भी है, सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य देखना चाहता है। अभी तो इसमें समय लग सकता है–2015 और उसके बाद 2017 तक इसमें आगे बढ़ने के कुछ अवसर होंगे।

We believe that we have left the foreign policy for our country at a level where there was wide spread appreciation in the world that we interacted and interfaced despite a very complex world that was growing into some very-very threatening conflicts. In the Middle East for instance, we have seen what is happening in Iraq and Syria, we have seen what is happening in Palestine and we have seen what is happening in other parts of the world which includes central Asia and East Europe. Under the UPA government; India's foreign policy was always taken to be stable, reasonable, sensible, fair and non-partisan foreign policy. Obviously the roots were in non-

alignment movement where one takes side with any major power blocks and India developed its own personality and its own existence in a very complex world.

श्री खुर्शीद ने कहा कि हमे अब ऐसा लगता है कि जहां एक तरफ आम सहमति की बात होती रही–कोई भी सरकार आई बहुत सारी सरकारें आईं जो हमने एक अपना अस्तित्व बनाया था पूरे विश्व में विदेश नीति को लेकर और जो हमने आधारशिला रखी थी उसको सबने स्वीकार किया और उसी पर सबने जो भी सरकार में आया उसने उसी नीति को बरकरार रखने का प्रयास किया। कहीं 19, 20 का अन्तर रहा, थोड़ा बहुत प्राथमिकताओं में अन्तर आया पर जो मुख्य धारा थी, उस मुख्य धारा को सबने स्वीकार किया। और हम ऐसी अपेक्षा इस सरकार से भी करते हैं और हम बहुत ध्यान से और बहुत करीब से देख रहे हैं कि ऐसा ही हो रहा है या कुछ और हो रहा है।

कुछ प्रश्न उठते हैं जिनकी हम बात करना चाहते हैं वैसे आप लोगों ने विस्तार से किया है। प्रधानमंत्री विदेश यात्राओं पर गए हैं और ब्रिक्स की विदेश यात्रा पर गए, द्विपक्षीय हमारे अपने क्षेत्र में वो जो नेपाल की यात्रा पर गए वहां से आए विदेश मंत्री स्वयं बांग्लादेश गईं और हम भी जानते हैं कि शपथ–ग्रहण समारोह के लिए सार्क के सभी राष्ट्रों से सभी नेताओं का यहां स्वागत किया गया। लेकिन कुछ मुख्य प्रश्न है जिन पर हम समझते हैं कि ध्यान देने की आवश्यकता है। एक प्रश्न यह है कि देश तैयारी कर रहा है कि प्रधानमंत्री अमेरिका जाएं। अमेरिका के विदेश मंत्री और सचिव यहां आए थे। हमें थोड़ी सी निराशा हुई। निराशा इस बात की हुई कि जहां हम चाहते हैं कि हमारे संबंध सभी देशों से अच्छे हों, अमेरिका से अच्छे हों, रूस से अच्छे हों, जापान एवं चीन से अच्छे हों, मध्यपूर्वी सभी देशों के साथ जहां से हमको ऊर्जा मिलती है, जहां से हम तेल खरीदते हैं, अच्छे हों, यूरोप के साथ हमारे संबंध अच्छे हों, हमारे व्यापारिक संबंध और बेहतर हों हम यह चाहते हैं। लेकिन निराशा हमें इस बात की हुई कि विदेश मंत्री महोदया ने जो बातें बताई इस देश को कि अमेरिका के साथ एक स्नूपिंग का प्रश्न उठा था कि उन्होंने उस बात को बहुत मजबूती से रखा, निराशा इस बात की हुई कि जो हमने सचिव कैरी से सुना की कुछ और था। उन्होंने कहा कि यह खुफिया विभाग की बातें होती हैं, वो क्या करती हैं वो सार्वजनिक नहीं की जाती। तो ना हॉ कहा ना, ना कहा साथ–साथ में पत्रकार बंधुओं को क्या बात स्पष्ट हो पाई थी कि स्नूपिंग हुई थी या नहीं, कोई कहता है कि एक मंत्री की नहीं कई मंत्रियों की हुई तो अगर ऐसा ही हुआ है तो क्या हुआ है पहले उनको स्पष्ट बताया नहीं जब देश को नहीं बता पाए तो सचिव कैरी को क्या बताया होगा। फिर कई सारे मुद्दे अमेरिका के साथ हैं। हम यह नहीं कहते कि एक ही वार्ता में, एक ही चर्चा में सारी बातें तय हो सकती थीं, लेकिन हमारे समय से बहुत सारी बातें चली आ रही हैं, कुछ हमारे साफ्टवेयर इन्डस्ट्री के मुद्दे हैं, वीजा का मुद्दा है, कुछ और मुद्दे हैं जिन पर बहुत दिनों से चर्चा हो रही है। हम केवल यह सुनना चाहते हैं कि वो चर्चा आगे बढ़ी की नहीं बढ़ी। यह एक मुख्य बात है।

दूसरी मुख्य बात यह है कि जब हम लोग सरकार में थे तो एक देवयानी खोबराडे के संबंध में जो हमारी डिप्लोमेट है, जो हमारे देश का प्रतिनिधित्व करती थी और उनके साथ जो घटना घटी थी, वो दुखःद घटना थी और हम यह चाहते हैं कि जैसे हमने अपने समय में प्रयास किया था कि उस मामले को हमेशा के लिए समाप्त किया जाए। क्या उसको समाप्त करने की बात हुई या नहीं। यह बात नहीं कही गई।

अब अपनी विदेश नीति को अपने पड़ोस में ले चलते हैं। पड़ोस की विदेश नीति के संदर्भ में जिसका बड़ा महत्व है, सदा रहा है और रहना चाहिए कि पड़ोस में हमारे संबंध बहुत अच्छे रहें। अगर प्रधानमंत्री भूटान गए और उन्होंने यह कहा कि उनकी भूटान यात्रा सफल रही तो अच्छी बात है। अगर वो नेपाल गए और कहा कि नेपाल की यात्रा सफल रही, यह अच्छी बात है। परन्तु सफल कैसे रही यह इन्हें देश को बताना चाहिए। यहां आकर केवल यह कह देना कि यात्रा सफल रही, हमारी बड़ी आव भगत हुई लेकिन जो ठोस बात है वो ठोस बात हुई या नहीं हुई, यह बात स्पष्ट होनी चाहिए। क्योंकि हमको आगे चीन के साथ भी वार्ता करनी है। हमें अपने चीन के संबंधों पर भी अध्ययन करना है। रूस के साथ संबंधों पर भी अध्ययन करना है। लेकिन इस समय पड़ोस में निर्णय लिया हमारी सरकार ने कि हमारे विदेश सचिव शायद 25 या 26 अगस्त को पाकिस्तान जाएंगे। और वहां के विदेश सचिव से उनकी वार्ता होगी। एक प्रश्न उठता है क्या पहले जो स्थिती थी उसमें सुधार हुआ है और अगर हुआ है तो क्या सुधार हुआ है। जिससे विदेश सचिव आपस में मिलकर बैठ कर बात करें। हम यह नहीं कहते कि हम जिस पड़ोस में हैं उन पड़ोसी देशों से हम समय–समय पर बातचीत ना करें। बातचीत करनी चाहिए और यह अच्छी बात है। लेकिन पाकिस्तान के साथ जो हमारे संबंध थे उनका निचोड क्या निकाला जाता था भाजपा की ओर से कि हमने उनको भोजन में क्या दिया। यह कहा जाता था कि मैंने भी शायद बिरयानी खिलाई। क्या पाकिस्तान जाते समय यह निर्णय लिया गया है कि खाना–खाना लेकिन बिरयानी ना खाना। क्या यह आदेश दिए गए हैं। या यह कहा गया है कि खाना अपना ही ले जाना, अपना ही खाना, उनका मत खाना। और खाना तो कहना कि नमक मत डालना इसलिए कि नमक हरानी अच्छी चीज नहीं होती है। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि यह बहुत संजीदा और बड़ा गंभीर विषय है भारत के लिए पूरे क्षेत्र के लिए। हमको दुःख है और हम समझते हैं कि जो हम से कही गई और पूरी नहीं की गई पाकिस्तान की आरे से। तब भी हम यह मानते हैं कि हम उनसे बड़ा देश हैं, हम ज्यादा शक्तिशाली देश हैं, हमारी सहन–शक्ति ज्यादा रही, और हमको पूरी दुनिया ने माना है कि हमारे साथ जो हुआ वो सही नहीं था और तब भी हमने बड़ा संयम दिखाया। यह पूरी दुनिया ने माना है। और अच्छी बात है कि दुनिया ने हमारा यह पहलू समझा, देखा और माना और इसका अर्थ यह नहीं ...0000 कोई यह समझे कि इनके साथ जो चाहे वो कर लो।

इसीलिए हम यह प्रश्न पूछ रहे हैं कि कोई निर्णय जब लिया गया है जाने का या विदेश सचिव को भेजने का तो उस निर्णय का संदर्भ क्या है, उसकी बुनियाद क्या है, उसका आधार क्या है और क्या पहले से स्थिती में कुछ सुधार हुआ है। इसलिए वहां

यह वार्ता का निर्णय लिया गया। सुधार की अपेक्षा है, या सुधार हुआ है, यह बताएं देश को। उसके बाद यह वार्ता हो ताकि हम पूछ सकें कि वार्ता का क्या निष्कर्ष निकला। आगे कुछ बात बढ़ सकती है या नहीं बढ़ सकती है। यह न भूलें कि कुछ घटनाएं घटीं थीं जिसकी बड़ी आलोचना की गई थी लेकिन हमें यह याद है कि हमारे वाणिज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा जी पाकिस्तान जाने वाले थे और व्यापार के संबंध में जो बातचीत बहुत दिन से चल रही थी उसको आगे बढ़ाने के लिए लेकिन क्योंकि वो घटनाएं घटी जिनका हमें अत्यन्त दुःख था, इसलिए उस वार्ता को स्थगित किया गया था, वो नहीं गए थे। सचिवों की वार्ता भी स्थगित की गई थी। इसलिए यह जरूरी बनता है कि यह सरकार हमको स्पष्ट साफ शब्दों में बताए कि तब में और अब में स्थिती में क्या अन्तर हुआ है। क्या एक बार हाथ मिलाने से सदियों–सदियों की जो शिकायतें, तकलीफें और जो हमको चोट है वो दूर हो जाती हैं। क्या इसीलिए यह वार्ता होने जा रही है। हम चाहेगें कि इस बात को स्पष्ट किया जाए। और मैं स्वयं यह चाहूँगा कि हमको यह बता दिया जाए कि खाने का मेनू क्या था इसलिए कम से कम बिरयानी वाली बात हमेशा–हमेशा के लिए इतिहास में बंद कर दी जाए। और अगर बिरयानी ही खाना है तो कम से कम बताएं कि हमारी बिरयानी अच्छी थी या उनकी बिरयानी अच्छी है। यह बात अवश्य बता दें।

यह जो विदेश नीति की बात है उसमें हमारी ट्रेड नीति भी आती है–डब्लयू.टी.ओ के संदर्भ में। यह बात आप लोगों को श्री आनन्द शर्मा जी कह चुके हैं कि हम लोगों ने जो बाली में सफलता प्राप्त की थी, बहुत सारे देशों को साथ जोड़ दिया था– वो लग रहा है कि वो बिखर गया। और खाद्य सुरक्षा जो हमारे लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है।

Shri Salman Khurshid said that food security is a major issue that the consensus which we have been able to build has been dispersed and India stands isolated. Diplomacy is not about heroics; diplomacy is about being a hero and not just showing that you have done some heroics. I think this is a serious matter. I think right across the span, we are lacking in serious approach in implementation of foreign policy but these are early days for the government. We do not want to pass final judgment but we do want to add this caution that these are very serious matters and we feel that they are not being taken in the spirit of seriousness and with the care and caution that India's foreign policy deserves.

To a question as to what, in specific terms, you want from Prime Minister when he meets President Obama, Shri Khurshid said I frankly feel if he consults our party, we would say what our priorities are and they would remain priorities largely when we spoke, when I spoke to Secretary Kerry on several occasions and the PM met with President Obama at the White House in the previous year but I think a good thing is that they should share what their intents are, what their priorities are, what are they going to do in US in terms of are they going with the shopping list, are they

going with a bag of goodies, are they going to offer something, are they going to seek something, that should be clear. Our relationship with the US is important relationship. It is a relation that has been nurtured very carefully by the UPA and there have been remarkable developments in relationship with the US but there are differences which are because of domestic constraints both in the US and in India and we have to use the best diplomacy to ensure that the distance created by domestic constraints largely of economic nature but you might call them partly economical. Those constraints are put to rest. We do know that when we were in government, we insisted on certain issues of reciprocity. I read from the newspaper columns that some of that reciprocity has been given a go by - something to do with clubs and facilities that are available to diplomats. We are concerned that an Indian diplomat was treated very badly and therefore, we thought that if our diplomats are going to be treated very badly, then courtesies and extra courtesies towards the US diplomats must be curtailed purely and simply on account of reciprocity. If that is being changed, I think the country would like to know. There should not be any difference in what you say and in what you do.

On another question to elaborate the 'isolation' part, Shri Khursid said I would not speak in great detail because a very detailed paper has been given to you by Shri Anand Sharma who has analyzed very categorically and carefully. I would not want to divert your attention at all to something that I say which might not the best available to you. But what he has said that we were left with two or three countries whereas larger consensus of very important countries had been built in Bali on Food security.

On another question as to what has been your take on India's foreign policy, Shri Khurshid said that is why I said no conclusive judgments but we are duty bound to caution when we see that there is a slip and a slide. It is not something that should be not done. We are just trying to be careful because if you end up damaging foreign policy, repair takes a very long time. Therefore, we believe and we are concerned about our national aspirations in the entire globe. It is important that we must keep the foreign policy on the right track unless of course somebody categorically says we want to depart from this track but in that case it should be brought before the people.

To a question that Prime Minister should tell the details of his meetings to the nation, Shri Khurshid said I am beginning to wonder whether the Prime Minister thinks that he had a quota of how he speaks and therefore, he does not have anything left but I think as Prime Minister all the advise he was giving to us, he should continue to give it to himself, he should be more available, more transparent

and certainly he should speak more, if he does not want to speak in parliament, at least he must speak to you people.

मेरठ में घटी घटना पर और अभी तक उसकी जांच पर कांग्रेस पार्टी की प्रतिक्रिया पूछे जाने पर, श्री खुर्शीद ने कहा कि पुलिस रिपोर्ट पर मेरी कोई टिप्पणी करना यहां बैठकर अच्छा नहीं होगा। हमारे नेता मेरठ में भी हैं हमारे नेता यूपी राज्य स्तर पर भी हैं और हमारे महासचिव यहां भी हैं। मैं यह मानूंगा कि अगर इसमें कुछ भी सच्चाई है तो हम सबके लिए यह बहुत दु:ख का विषय है। और इसमें कोई पार्टी यह कहे कि यह एक राजनैतिक प्रयास किया जा रहा है, मैं समझूंगा कि यह अच्छा नहीं है। अगर कोई सच्चाई है या कोई शुबा भी है तो गहराई से उसकी जांच होनी चाहिए। लेकिन पूरे कांड के संदर्भ में जो पूरी जानकारी हमारे महासचिव महोदय को है तो मैं समझता हूं कि जब वे समझेंगे कि उनको आपको और बात बतानी चाहिए वो अवश्य ऐसा करेंगे।

एक अन्य प्रश्न पर कि अमेरिका दौरे पर जाने पर पहले सरकार कैसे फैसले ले रही है जैसे एफडीआई, श्री खुर्शी ने कहा कि कुछ ना कुछ परिवर्तन के लक्षण दिख रहे हैं। वो परिवर्तन देश के लिए अच्छा है या बुरा है इस पर चर्चा होनी चाहिए। जब हम एफडीआई रिटेल ला रहे थे तो क्या कहा जा रहा था अब एफडीआई के लिए खुली छूट है। और चर्चा नहीं हो रही। अगर दबाव है तो बुरा है और बिना दबाव के है तो और भी बुरा है। लेकिन जो कर रहे हैं इसकी चर्चा खुल कर होनी चाहिए। चर्चा क्यों नहीं करते हैं। यह देश आत्म–निर्भर हो हर चीज में हो, सुरक्षा के संदर्भ में अच्छी बात है हम इसका स्वागत करते हैं। लेकिन यह देश पूरे विश्व के लिए घातक देश हो जाए, सब जगह शस्त्र भेजना शुरू कर दे, तो क्या इस देश का सही परिचय पूरे विश्व के सामने होगा। चर्चा होनी चाहिए मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आज मैं इस पर तत्काल कुछ कह सकता हूं। इस पर चर्चा होनी चाहिए। और चर्चा वहां होनी चाहिए जहां सारे बड़े नेता बैठें, संसद में हो या हमारे साथ चर्चा करें। हमारे नेता उसके बाद कुछ उचित होगा तो उचित निर्णय लेंगे।

On the question of the India's foreign policy in the backdrop of meeting of Ms. Sushma Swaraj with, Secretary of US Ms. Kerry, Shri Khurshid said there is a clear case of hypocrisy. I am honestly not going to say that every party is a 100% the same in power and outside power because when you are in opposition, in order to catch attention of the populist that has not voted for you or not supported you to the extent you wanted, you raise the pitch, but if you raise it so much that when you happen to come to power, you will find it difficult, that is what is happening with the BJP. They raised the pitch on foreign policy to such an extent that they do not know what to do with it. There is an honorable way of doing it - that is to stand up and he should admit that I was wrong. We are going to have Independence Day very soon, let it be announced there. . I have just discovered you should not do such things. We took a consistent position, we did not go back to the composite dialogue,

we did not even go back to resumed dialogue, we only said at best, we will have some points of contact informal or partly formal, some points of contacts to figure whether it is possible to move back in some form of dialogue and if we are to move back to some form of dialogue, we must have some deliverables, we were very clear on that. Let me tell you I was present when our PM Dr. Manmohan Singh spoke to the PM of Pakistan at the UN. It was very clear that this deliverable will have to be made and the PM of Pakistan indicated in the manner in which a communication can indicate that there would be some satisfaction. If there is no satisfaction, how do we move forward? If there is a reason that I can't figure out and they should share that reason with me or the rest of the world, if they were wrong, they should simply say we were wrong. There is nothing wrong in saying we were wrong.

कांग्रेस पार्टी की हाल ही में सम्पन्न हुए लोकसभा चुनाव में हार हुई जिसके बाद तीन राय सामने उभरकर आई, श्री खुर्शीद ने कहा कि मैं तीनों रायों के साथ हूं। इसलिए कि यह सब राय अलग–अलग है। सब लोग इकट्ठे बैठते हैं सामूहिक रूप से जो लोग मेरी सोच के हैं वो एक बात स्पष्ट कहते हैं कि हमने अपने नेतृत्व को चुना, माना स्वीकार किया। हमने यह नहीं कहा कि अच्छे दिनों के लिए है। हमने यह नहीं कहा कि बुरे दिनों के लिए हैं, हमने यह कहा कि हम इस समय आपके साथ हमने एक रिश्ता बनाया और यह अटूट रिश्ता है, वो अटूट रिश्ता रहेगा, हम बहुत सारे लोग ऐसे हैं। कोई कुछ कहता है, हम सुन लेते हैं, लेकिन हमारा मत बड़ा स्पष्ट है, कौन हमारा नेता है और हमारे नेता जो चाहते हैं और हमसे अपेक्षा करते हैं उस पर हम खरा उतरने की कोशिश करते हैं। हमारी अध्यक्षा माननीय श्रीमती सोनिया गांधी जी हैं, हमारे उपाध्यक्ष माननीय श्री राहुल गांधी जी हैं, उन्होंने हमसे कुछ अपेक्षा की थी इस चुनाव में हम उस पर शायद खरे नहीं उतर पाए। अगर नहीं खरे उतर पाए तो अब हमको और मेहनत करनी होगी, कोशिश करनी होगी कि हम उन उपेक्षाओं पर खरे उतर सकें। हम करेंगे। हम कर रहे हैं लेकिन हम जानते हैं कि चमत्कार नहीं हो सकता, राजनीति है, लोकतंत्र है, चमत्कार तत्काल नहीं हो सकता लेकिन हम आशा करेंगे कि हमारे नेता आपको चमत्कार भी आगे दिखाएंगे।

उच्चतम न्यायालय का नेता विपक्ष पर निर्देश जाने पर पूछे गए प्रश्न के उत्तर में, श्री खुर्शीद ने कहा कि उच्चतम न्यायालय हम नहीं गए। कुछ हम में समझ होगी, इसलिए नहीं गए। जो गया उससे आप पूछ लीजिए क्यों गया।

(Tom Vadakkan)
Secretary
Communication Deptt.